चतुर्थ अध्याय

'अपने - अपने अजनबी' में जीवन दर्शन

प्रस्तावना :

'अपने - अपने अजनबी' 'अज्ञेय' जी का अंतिम उपन्यास है। इस आधुनिक उपन्यास की विशेषता यह है कि इसमें कथानक की मर्यादा का निर्वाह कौशल्य के साथ हुआ है। अपनी कृति में प्रयोग की नवीनता यह 'अज्ञेय' जी की एक विशेषता है। यह वैयक्तिक विशेषता इस उपन्यास में भी दिखाई देती है। यह प्रथम प्रतीकात्मक और प्रथम दुःखान्त उपन्यास है।

'अज्ञेय' जी का अस्तित्ववादी दृष्टि से भी यह पहला उपन्यास है। उन्होंने आधुनिकता के दो मोटेतौर के पक्षों में से विज्ञान विरोधी पक्ष को ग्रहण किया है, जो मनुष्य के तात्त्विक शोध विषयों में विश्वास करता है।

'अपने-अपने अजनबी' में 'अज्ञेय' ने अपने पहले के दिनों उपन्यासों से बिल्कुल एक भिन्न प्रकार के प्रश्न को हाथ में ले लिया है। योके और सेल्मा नामक स्त्री पात्रों के द्वारा उपन्यासकारने जीवन, मृत्यु, विश्वास आदि विषयों से संबंधित प्रश्नों पर विचार किया है।

'अपने-अपने अजनबी' को कुछ विचारक उपन्यास मानने में ही हिचकिचाते हैं। सच देखा जाय तो 'शेखर : एक जीवनी' तथा 'नदी के द्वीप' इन उपन्यासों की तरह 'अपने-अपने अजनबी' भी एक सफल उपन्यास है। कुछ विद्वान स्पष्ट रुपसे कहते हैं कि 'अपने-अपने अजनबी' 'अज्ञेय' के रचना प्रकारो में बिल्कुल एक नया मोड़ है। उपन्यास के आवरण पृष्ठ में 'अपने-अपने अजनबी' के बारे में यही कहा गया है 'मृत्यु से साक्षात्कार' को विषय बनाकर मानव के जीवन और उसकी नियति का इतने कम और इतने सरल शब्दों में ऐसा मार्मिक और भव्य विवेचन शायद ही कोई दूसरा लेखक कर सकता था। मृत्यु को सामने पाकर कैसे प्रियजन भी अजनबी हो जाते हैं और अजनबी एक-एक पहचाने हुए, कैसे इस चरम स्थिति में मानव का सच्चा चरित्र उभर कर आता है - उसका

प्रत्यय, उस का अदम्य साहस और उसका विमल अलौकिक प्रेम भी वैसे ही और उतने ही अप्रत्याशित ढंग से क्रियाशील हो उठते हैं जैसे उसकी निम्नतर प्रवृत्तियाँ ----' अपने-अपने अजनबी' के पात्र विदेशी हैं और कहानी भी विदेश में घटित होती है, पर अपनी गहराई में उपन्यास पूर्व और पश्चिम का भी एक साक्षात्कार है : मृत्यु के प्रति जिन दो विरोधी भावों की टकराहट इन में है, वास्तव में उनके पीछे पूर्व और पश्चिम की जीवन दृष्टियाँ हैं, वे दो दृष्टियाँ ही यहाँ मिलती हैं और मानव-जीवन के एक नये आयाम का उन्मेष करती हैं।'

कृति का सामान्य पर्यालोचन :

'अज्ञेय' केवल काव्य के क्षेत्र में ही नहीं, वरन् गद्य के क्षेत्र में भी अपने अद्वितीय एवं मौलिक रुप में ही अभिव्यक्त हुए हैं। इन्होंने तीन उपन्यासों की रचना की है - 'शेखर : एक जीवनी' (दो भाग), 'नदी के द्वीप' और 'अपने-अपने अजनबी'। ये तीनों उपन्यास ही अपनी मौलिकता तथा नवीनता के लिए प्रसिध्द हैं। 'शेखर : एक जीवनी' में व्यक्तित्व और स्वातंत्र्य की खोज है, यदि 'नदी के द्वीप' में एकदम अछूते एवं विशिष्ट प्रणय का अंकन है तो 'अपने - अपने अजनबी' में मृत्यु से साक्षात्कार का चित्रण है।

जिस प्रकार मृत्यु से साक्षात्कार करते समय न तो व्यक्तित्व की गरिमा तथा विशालता का ही बोध रहता है, और न जीवन की व्यापकता का ही प्रबोध शेष रहता है, और ये दोनों सिमटकर बहुत ही संकुचित हो जाते हैं, उसी प्रकार 'अपने-अपने अजनबी' का कथानक भी संकुचित, व्यापकता से हीन भावों के वैविध्य से रहित और केवल मृत्यु के ही ईर्द-गिर्द घूमनेवाला कथानक है।

'अपने-अपने अजनबी' की कथावस्तु एक विशेष प्रकार की है। सामान्य रूप में आकार की दृष्टि से इसे लघु उपन्यास कहा जा सकता है। इस उपन्यास के तीन विभाग हैं -

1. योके और सेल्मा - जिसमें योके की डायरी द्वारा कथा प्रस्तुत है।
2. सेल्मा - जिसमें सेल्मा स्मृति के सहारे कथा को आगे बढ़ाती है।
3. योके - जिसमें योके अपनी मनोव्यथा का वर्णन करती है।

योके और सेल्मा के सिवा इस उपन्यास में यान एकेलोफ़ , पॉल, फोटोग्राफर तथा जगन्नाथन आदि कुछ कम महत्त्व के पात्र भी हैं। पूरे उपन्यास में मृत्यु से साक्षात्कार में विचार तत्त्व का चित्रण किया गया है। यह एक दुःख में अंत होनेवाला उपन्यास होकर भी जीवन के प्रति प्रेम के भाव को स्पष्ट करनेवाला उपन्यास है।

एक बर्फाच्छादित प्रदेश में लकडी के घर में सेल्मा एकेलोफ़ के साथ तरुणी योके कुछ दिन रहती है। वहाँ सफर करने के लिए और बर्फ पर दौंडने के लिए योके आई थी। पहाड़ की

तराई में लकडी के बंगले की स्थिति से आकर्षित हो गई और उसने सेल्मा के पास-यहाँ रहने का अपना विचार प्रकट किया। सेल्मा गड़रिये की माता है। उसके तीन लड़के मैदान में गये हुए हैं। सर्दी के दिनों के बाद ही वे वापस आनेवाले हैं। उपन्यास का प्रारंभ लकड़ी के घर पर बर्फ के पहाड़ के गिरने से होता है--'एकाएक सन्नाटा छा गया। उस सन्नाटे में ही योके ठीक से समझ सकी कि उससे निमिष भर पहले भी कितनी जोर का धमाका हुआ था बल्कि धमाके को मानो अध-बीच में दबा कर ही एकाएक सन्नाटा छा गया था।'[1]

यह बडी आवाज बर्फ के पहाड़ के गिरने से हुई। अब दोनों इस लकड़ी के घर में सर्दी के दिनों तक बंद हो जाती हैं। ढाई से तीन महिने तक बर्फ से घिरे इस घर में समय काटने का संकट उन पर आ जाता है। सेल्मा तो इसके लिए कदाचित तैयार भी थी। इसके पहले भी एक आध सर्दी के दिन वह काट चुकी है। तरुणी योके के लिए यह कठीन था। वैसे तो इस लकड़ी के घर में सर्दी भर के लिए पूरा पड़ेगा इतना खाने-पीने का सामान भी है। चरबी के स्टोव के लिए भरपूर इंधन भी है। परंतु सर्दी भर के लिए यहाँ बंद होने की बात सुनकर योके कहती है : 'मेरी तो छुट्टियाँ भी इतनी नही हैं।'[2] इस समय सेल्मा कहती है : 'छुट्टी तो शायद - मेरी भी इतनी नहीं है - पर'[3]

इसके बाद पाठक मृत्यु के पैरों की आवाज सुन लेते हैं - 'मृत्यु से साक्षात्कार' यह इस उपन्यास का विषय है। योके को लगता है कि शायद सेल्मा का अनुमान है कि दोनों अब बचेंगी नहीं, 'यही बर्फ से ढँका हुआ काठ का बँगला उन की कब्र बन जायेगा? बल्कि कब्र बन क्या जायेगा, कब्र तो बनी - बनायी तैयार है और उन्हीं को मरना बाकी है।'[4]

योके की डायरी के द्वारा इसके बादवाली बात हमारे सामने आती है। बर्फ के अंदर बंद हो जाने के दसवें दिन से योके अपनी डायरी लिखना आरंभ कर देती है। इस डायरी में हर दिन की घटनाएँ - और हर दिन की घटनाएँ क्या होगी? और सेल्मा के प्रति उसकी प्रतिक्रिया का वर्णन है। सेल्मा उसके प्रति अधिक से अधिक अजनबी होती जाती है। और सेल्मा के शांत, संयमनशील विश्वासयुक्त व्यवहार को देखकर वह सेल्मा के प्रति क्रोधित होती है। सेल्मा और योके - दोनों के दृष्टिकोण में फर्क होने के कारण एक दूसरे से अलगाव का भाव अनुभव करती है। यह भेद जवान योके में ही अधिक बना रहता है। क्रीसमस के दिन वे लकड़ी के घर में बिताती हैं। योके के मन में अनेक बातों को लेकर 'घोर विरोध' के भाव निर्माण होते जाते हैं। योके को यह भी अनुभव होता है कि वहाँ सेल्मा और ओके को छोड़कर एक तीसरा भी कोई है और वह है - मृत्यु। योके के मन में भय निर्माण होता है परंतु सेल्मा के मन में आस्था है। वह अपने मन में मृत्यु को स्वीकार भी करती है। योके के प्रति उसके मन में कोई विरोध का भाव भी नहीं है। योके के मन में मृत्यु के बारे में कौतुहल निर्माण हो उठता है लकडी के घर के एक जैसे जीवन के बारे में उसे बुरा लगता है। सेल्मा

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

की परेशानी देखकर उसे एक प्रकार का आनंद होता है। एक समय ऐसा भी आ जाता है सेल्मा भी इस जीवन से ऊब जाती है और बचपन की गालियों को बड़बड़ाती है। भंडारे की चीजों को फेकने लगती है। अब वह सेल्मा को अपने नजदिक पाती है। परंतु सेल्मा योके के लिए अजनबी बन जाती है। एक समय तो योके अत्यधिक जिज्ञासा में अपने हाथ सेल्मा के गले की ओर बढ़ाती है, परंतु रुक जाती है। उसे अब अपने पास आनेवाली मृत्यु की गंध आने लगती है। उसे ऐसा महसूस होता है कि - "मरना सेल्मा को है, मरेगी वह, लेकिन मर रही हूँ मैं, अकेली मैं ----।"[5]

सेल्मा योके को बता देती है कि यह सब वह इसके पहले देख चुकी है, जब वह खुद योके की तरह जवान थी। उस जवानी में सेल्मा की एक दुकान थी। वह दुकान शहर के नजदिक से बहनेवाली नदी के पूल पर थी। एक बहुत बड़ी बाढ़ के साथ भूकंप में पुल का मूल आधार हिल गया। दोनों सिरे टूट गये और बह गये। तीन खंभों के टांगो पर पुल के बीच का हिस्सा रह गया। उस हिस्से पर तीन-चार दुकानें और तीन-चार लोग रह गये। उन लोगों में से एक थी सेल्मा डालवर्ग, एक यान एकेलोफ़ और एक फोटोग्राफर। बाढ़ की स्थिति ऐसी थी कि वहाँ कोई भी मदद नहीं पहुँच सकती थी। इस अवस्था में सेल्मा अपनी दुकान में खाने पीने की चिजों की कीमतें बढा देती है। इससे यान आश्चर्यचकित होता है। / यान उसके यहाँ पानी माँगने के लिए आये फोटोग्राफर को पानी देने के लिए भी तैयार नहीं होता। / जब चौथे दिन यान फिर कुछ खरीदने के लिए आता है तब सेल्मा महसूस करती है कि उसके मन में यान को लेकर कठोरता का भाव निर्माण हो गया है।

बाढ़ की स्थिति में कुछ बदल नहीं दिखाई देता, वह देखती है कि फोटोग्राफर की दुकान जल रही है। फोटोग्राफर दुकान से निकलकर जोर से चिल्लाकर पानी के प्रवाह में कूदता है और आत्महत्या करता है। अब वहाँ यान और सेल्मा दोनों ही रह जाते हैं। एक बार मांस खरीदने के लिए यान फिर आता है। इस अवस्था में भी सेल्मा पहले की कीमत माँगती है। इतना ही नहीं कम दाम पर दिया गया मांस वापस लेती है। इसके बाद आधा पुनः काट लेती है। उसके मन में यान को लेकर जबरदस्त विरोध का भाव वैसा ही रहता है। रात के वक्त जब यान दरवाजा खटखटाता है तब वह लोहे की छडी लेकर दरवाजा खोलती है। यान उसे कहता है कि तुम मुझे मारना चाहती हो मगर मार नहीं सकती।" "अगर मैं तुझे चाहूँ तो जान से मार सकता हूँ। लेकिन मैं मारना नहीं चाहता। सेल्मा फिर कहती है मेरे मरने के बाद तुम अकेले मरोगे तो उसमें क्या सुख मिलेगा?" बल्कि तो तुम अब भी हो, जब कि मैं नहीं हूँ। और शायद मर ही चुकी हो जब कि मैं अभी जिन्दा हूँ।"[6] वह अपने साथ पकाया हुआ मांस लाया है। उसमें से आधा हिस्सा वह सेल्मा से लेने के लिए कहता है। यान को इन्कार करने के लिए आगे किया हुआ हाथ सेल्मा अचानक यान के कंधे पर रख देती है। खुद आश्चर्यचकित हो जाती है। एक क्षण उसके मन में विरोध का भाव निर्माण होता है लेकिन

अचानक यान के सामने विवाह का विचार रख देती है। यान पहले घृणा से इन्कार करता है और वहाँ से चला जाता है। फिर सेल्मा अपनी मांस की दोनों प्लेटें साथ ले जाती है। भागीदारी करने की बात करती है, लेकिन वहाँ बैठकर खा नहीं सकती। अपने कमरे में वापस आती है। फिर सेल्मा यान से उसे स्वीकार करने के लिए कहती है। उन दोनोंका जीवन नये सिरसे आरंभ होता है।

सेल्मा की यह बात खंड-खंड करके कही गई थी। परंतु योके के मन में सेल्मा की इन बातों को लेकर विरोध का भाव ही जाग उठता है। सेल्मा की मृत्यु होती है। योके मृत्यु की गंध से आच्छादित हो जाने का अनुभव प्राप्त करती है। योके इस गंध को दूर करना चाहती है, परंतु उसे अनुभव होता है कि वह गंध उसी के ही शरीर से आ रही है। फिर वह सेल्मा के दरवाजे को खोलती है। सेल्मा के मृत शरीर से कंबल उठाती है और लाश को बर्फ पर रख देती है। बर्फ में लाश को ढँकते समय उसके मन में प्रार्थना का विचार आता है। परंतु अब तक ईश्वर के नाम पर सिर्फ थूकना ही उसे मालूम है। इसीलिए सेल्मा से क्षमा माँगकर शव को बर्फ सेआच्छादित कर देती है। इस समय उसका प्रेमी पॉल सोरेन शोर-गुल करता हुआ वहाँ आता दिखाई पड़ता है। पॉल अब योके को अजनबी लगता है।

इसके बाद जिस योके को हम देखते हैं, वह पॉल की प्रेमिका नहीं है। युध्द के दिन हैं, चारो ओर भय है,योके कुछ पागलसी है। जर्मन सैनिकोंने उसे वेश्या बना दिया है। जगन्नाथन् नाम का एक भारतीय दुकान से कुछ लेकर जा रहा था इतने में योके उदास भाव से उसके पनीर में सिगरेट लगाकर उसकी तरफ देखती है और आगे निकल जाती है। बाद में उसने कुछ खा लिया। तो उसका शरीर ढीला पड़ जाता है। जगन्नाथन् से वह माफी माँगती हुई कहती है, "मैं चाहती थी कि मैं किसी अच्छे आदमी के पास मरुँ, क्योंकि मैं मरना नहीं चाहती थी - कभी नहीं चाहती थी।"[7] मरते समय वह अपने को ईसा की माँ मरियम बताती है। फिर जगन्नाथन् से माफी माँगती हुई कहती है कि उसने उसे माफ कर दिया है। लेकिन उसका नाम नहीं लिया था। वह कुछ अडचन में आ गई है ऐसा लगता है। जगन्नाथन् को ऐसा लगता है कि योके ने कहा था, "ईश्वर को।"[8]

वह जगन्नाथन् की गोद में मर जाती है यह जो परिस्थिति है बहुत नाटकीय लगती है, ऐसी घटनाएँ घटती जरूर हैं, ऐसी घटनाओंका वर्णन लेखक ने खुद सुना था। कथावस्तु का अंतिम अंश "योके" - बहुत शक्तिहीन और अनुभवहीन सा लगता है। कथानक का यह हिस्सा कथानक का सहज विकास न होकर वह ऊपर से लादा गया है,ऐसा लगता है। उपन्यासके इस रचना क्रम में ढीलापन आ गया है। जब हम उपन्यास की रचना प्रेरणा के मूल प्रवाह तक पहुँचते हैं तब इस अति विशिष्ट परिस्थिति के चुनाव का कारण हमें मालूम होता है।" "अज्ञेय" ने बड़ी कलात्मकता के साथ विशिष्ट स्थितियों का चयन करके "बिना कफन की कब्रगाह" के अजनबीपन, मानवीय संबंधों की क्रूरता से पनपे

अजनबीपन और भीड़ के भीतर के अजनबीपन को सर्जनात्मक स्तर पर उभारा है।"[9]

जीवन दृष्टि :

अन्य उपन्यासों की तरह 'अपने-अपने अजनबी' उपन्यास में 'अज्ञेय' जी की अस्तित्ववादी जीवन दृष्टि दिखाई देती है। 'अज्ञेय' जी व्यक्ति और समाज को एक दूसरे के उपयोगी मानते हैं। विभिन्न पध्दतियों से यह उपन्यास मानव जीवन के विभिन्न पक्षों को चित्रित करता है। "वर्ग-वैषम्य, साधारण मानव जीवन की कुण्ठाएँ एवं अतृप्त वासनाएँ तथा कामनाएँ, आर्थिक विषमताएँ, मध्यवर्ग का शोषण, पूँजीवाद की असमानताएँ आदि ऐसी ज्वलन्त सामाजिक समस्याएँ हैं, जिनसे उपन्यासकार का प्रभावित होना स्वाभाविक है और इनके कड़वे-मीठे अनुभवों से वह अपने कुछ निष्कर्ष निकालता है और विचार एवं उद्देश्य निर्मित करता है जिसे हम उपन्यासकार का जीवन दर्शन की संज्ञा देते हैं।"[10] यहाँ निम्नांकित मुद्दों के क्रम से लेखक के विचार तत्त्व एवं जीवन दृष्टि की पहचान का प्रयास किया जा रहा है-

1. कालानुभव संबंधी धारणा का स्पष्टीकरण
2. मृत्युबोध या मृत्यु से साक्षात्कार की समस्या
3. अस्तित्ववाद की स्थापना

1. कालानुभव संबंधी धारणा का स्पष्टीकरण :

कुछ विचारकों के विचारों के अनुसार 'अज्ञेय' ने अपनी रचनाओं में मनुष्य चेतना के अंतर्गत काल अनुभव और भाव अनुभूति के प्रश्न को महत्त्व का स्थान दिया है। अस्तित्ववादी के जीवन की तटस्थता की अनुभूति एक दूसरी प्रमुख विशेष बात है। "अस्तित्ववाद मानव जीवन के अर्थ, बुध्दि द्वारा नहीं अनुभूति, चेतना द्वारा पाना चाहता है और इस प्रक्रिया में उसकी दृष्टि असंलग्न निरपेक्ष दृष्टा मात्र की न होकर जीवन में भोक्ता, अभिनेता की दृष्टि है। वह जीवन जीता है और साथ ही उससे तटस्थ रहकर, उसके अर्थ का पता चलता है।"[11]

व्यक्तिवादी विचारतत्त्व को स्वीकार करते हुए इसके सत्य का वर्णन हम इस प्रकार करते हैं कि अस्तित्ववादी सत्य अनुभूतियों से उठनेवाली जिज्ञासाओं में निर्माण होता है। अकेलापन, अनाश्वासन निकट के अंत की चेतना, अलग किये जाने की चेतना, मृत्यु से निकट जीवन (परंतु हर क्षण मृत्यु का डर), जिज्ञासा की लाचारी, सिलसिलेवार सत्य का अभाव, संघर्ष, मानसिक पीड़ा, रोग, दुर्गंध, द्वेष, पर पीड़ा का सुख, नास्तिक विचार तत्त्व, ईश्वर, धर्म, अमरत्व आदि के प्रति अनास्था सभी अजनबी, सब कुछ क्षणिक, प्राप्त क्षण ही सत्य-सत्य, अनिश्चय ही वास्तविक सत्य आदि अवसाद से भरे हुए साधन

अस्तित्ववादी व्यक्तित्व की चेतना के प्रवाह में रहते हैं।

"अज्ञेय" की काल के अनुभव संबंधी धारणा "अपने-अपने अजनबी" में अधिक स्पष्ट हो गई है। काल क्या है, उसके ज्ञान का आधार क्या है इन प्रश्नों पर प्रस्तुत उपन्यास में विचार किया गया है। काल के तीन रुप हैं - भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल। ये तीनों रूप हमारी जीवन सापेक्ष अनुभूति है। इन तीनों से हम परिचित हैं। मनुष्य अपना अस्तित्व, सृष्टि के बदलाववाले अंगों को ध्यान में रखकर काल की त्रिमूर्ति की और गति की कल्पना करता है। मनुष्य का जीवन, जन्म और मृत्यु के दो सिरों से बंधा हुआ है। वह जीवन भर जन्म से मृत्यु की ओर अखंड गतिशील रहता है। और हर क्षण उसमें परिवर्तन होता रहता है। मनुष्य वैयक्तिक जीवन के आधार पर मानव जाति की रूढ़िगत जीवन गति को भी जान लेता है। जीवन यात्रा के जिस हिस्से को उसने खुद और मानव जाति ने निश्चित कर लिया है उसे वह विगत का नाम देता है। जिस क्षण में वह भूतकाल की यात्रा से अपने को अलग करके देखता है वह क्षण उसका वर्तमान काल होता है। और जिस क्षण वर्तमान, वर्तमान न रहकर भूतकाल बन जायेगा, वह बाद में आनेवाला समय उसकी कल्पना में उसका भविष्यकाल है। इस तरह मनुष्य काल प्रवाह का ज्ञान अपनी बदलनेवाली स्थिति से प्राप्त करता है।

भयंकर एवं विनाशकारी बाढ से क्षतिग्रस्त पुल के ऊपरी हिस्से में अपने चायघर में रहनेवाली अकेली सेल्मा को इस बात से बहुत अधिक पीड़ा होती है कि इस बाढ़ के कारण उसके चायघर में कोई नहीं आ पाया। चाय घर के इस सूनेपन से उसके मन में व्यथा होता स्वाभाविक है और यह जानते हुए भी कि वह केवल दो साथियों के साथ पुल के हिस्से पर अकेली रह गई है, उसके मन में न तो भय ही उत्पन्न होता है और न अपने साथियों के प्रति सहानुभूति। वह इस अवसर से भी लाभ उठाना चाहती है और इस भीषण संकट में घिरे अपने दोनों साथियों के प्रति संवेदना दिखाना तो दूर की बात है, उनसे भी अधिक से अधिक पैसा ऐंठने के लिए प्रयत्नशील रहती है।

भयंकर बाढ में घिरे हुए वे तीनों प्राणी (दो पुरुष और एक नारी) यह समझते थे कि उन्हें शीघ्र ही किसी भी प्रकार की बाहरी सहायता न मिल सकेगी और यदि वे परस्पर मिल-जुलकर रहें तो सम्भवतः बाहरी सहायता प्राप्त होने तक उनके प्राण बच जायें अन्यथा उनमें से जो जितना अभावग्रस्त होगा वह या तो परलोकवासी ही जायेगा या फिर उसे अपने अवशिष्ट साथियों में से जो अधिक साधन संपन्न होगा उसके समक्ष हाथ फैलाना होगा। उन दोनों पुरुषों की अपेक्षा नारी सेल्मा अधिक साधन संपन्न थी। इसीलिए वह "पडोसी धर्म" भी भूल गई और उसे यह भी स्मरण नहीं रहा कि मुसीबतों में घिरे प्राणी की जीवन-रक्षा करना मानवमात्र का कर्तव्य है।

वास्तव में मनुष्य का कालगति के संबंध में ज्ञान, खुद उसके अनुभवपर आधारित रहता है। वह इस गति को नियमों के अनुसार जानने के लिए अंधेरा और प्रकाश के एक दूसरे के

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

आधार पर उसका विभाक्तिकरण करता है। इस अंधकार और प्रकाश के क्रम का मूलाधार सूर्य है। यहाँ याद रखने की बात यह है कि जब सूर्य-प्रकाश हमारी दृष्टि में रहता है तब वह काल का एक अंश- दिवस या दिन कहलाया जाता है। और बाकी रहे हुए को रात्रि कहा जाता है। हमारे जीवन से सूर्य अलग हो जाने पर हमें कालगति स्तब्ध मालूम हो सकती है। इसी कारण से "अपने-अपने अजनबी" की योके मानव जीवन का आधार सूर्य मानती है और मानव को सूर्य का उपासक कहती है। इस प्रकार मानव के सूर्यपर आधारित काल के विभक्तिकरण का "अपने-अपने अजनबी" में एक नयी दृष्टि से अध्ययन हुआ है। उपन्यासकारने इस उपन्यास के पात्रों के जीवन से बडे कौशल से सूर्य को अलग किया है, और काल तथा मानव जीवन के आपसी संबंध के प्रश्न को उपस्थित किया गया है। इस उपन्यास के सेल्मा और योके ये दोनों प्रमुख पात्र जब काठघर में थे तब बर्फ गिरने से वह काठघर बर्फ की चट्टान से आच्छादित हो जाता है। दोनों भी महिनों तक काठघर के अंदर बंद रहते हैं। दोनों के लिए वहाँ से बाहर आना मुश्किल हो जाता है। बर्फाच्छादित होने के कारण उस काठघर में सूर्य प्रकाश भी नहीं आ पाता और एक प्रकार का अस्पष्ट प्रकाश बना रहता है, जिसमें दिन और रात को अलग-अलग जानना कठीन हो जाता है।

मृत्यु के निकट पहुँचकर उत्कंठा एवं आकांक्षारहीत व्यक्ति के जीवन में प्राय: एक जड़ता सी व्याप्त हो जाती है। कैंसर रोग से पीड़ित वृध्दा सेल्मा को मालूम था, वह अधिक दिन तक जीवित नहीं रहेगी। इसलिए बर्फ पड़ना आरंभ होने पर सेल्मा के तीनों लड़के नीचे चले गये, तब भी वह बर्फ से आच्छादित काठ के घर में ही बन्द रही, मृत्यु की प्रतीक्षा में लीन एकाकी निस्संग। योके का वहाँ आना तो एक संयोग था जिसकी उसने कल्पना भी न की थी। वृध्दा सेल्मा कुण्ठित जीवन में व्याप्त जड़ता की चरमसीमा वहाँ दिखाई देती है जहाँ वह योके के साथ ताश खेलने बैठती है और खेलते-खेलते सो जाती है। सभी लोग भविष्य को जटिल मानकर उसके संबंध में जानने के लिए उत्कंठित रहते हैं, किन्तु बुढ़िया सेल्मा का भविष्य बहुत ही आसान था, इच्छा और आकांक्षा रहीत, नीरस जिसमें जानने को कुछ न था। योके जब उससे पूछती है, वह क्या यह नहीं जानना चाहती कि अगले क्रिसमस पर कहाँ होगी और कैसे होगी तो विफल एवं निराश सेल्मा जिसने मृत्यु से समझौता कर लिया उत्तर देती है, "योके अगर मैं कल मर जाऊँ तो तुम्हें कैसा लगेगा?" कभी एकाएक लगता है कि समय आ गया है। लेकिन मैं चाहती हूँ कि बर्फ के पिघल ने से पहले मैं मर जाऊँ।"[12]

सच देखा जाय तो योके का बर्फ से आच्छादित काठघर में रहने का समय इसी तरह का क्षण है। समय तथा निरपेक्ष अनुभव का आधार हमारा जीवन अनुभव या हमारा श्वासोच्छ्वास ही है। यहाँ ध्यान में रखने योग्य यह बात है कि हमारा जीवन अनुभव उस क्षण विशेष रुप में जागरुक रहता है, जब हमारे प्राणों में कठिनाई पैदा होती है। "अपने-अपने अजनबी" में बर्फ से आच्छादित काठघर

तथा नदी की बाढ से घिरे पूल पर रहनेवालों की यही स्थिति है।

2. मृत्युबोध या मृत्यु से साक्षात्कार की समस्या :

"शेखर : एक जीवनी" के समान ही "अपने-अपने अजनबी" में भी "अज्ञेय" का मृत्यु भय से गृहित मन का चिन्तन है। "अपने-अपने अजनबी" लेखक की दृष्टि में यही कहा है, "मूल समस्या तो वही है, अन्तर केवल यह है कि शेखर के सामने प्रश्न यह था कि मेरी मृत्यु की सिध्दि क्या है, यानी मैं मर जाता हूँ तो कुल मिलाकर मेरे जीवन का क्या अर्थ हुआ? पर यहाँ यह है कि जीवन, मात्र नक्शे में मृत्यु मात्र का स्थान है और यहाँ मैंने दो दृष्टियों को सामने लाने की कोशिश की है। एक को मोटे तौर पर पूर्व की कह सकते हैं और दूसरे को पश्चिम की।"[13]

उपन्यासकार कथावस्तु के द्वारा ही अपने खंडित व्यक्तित्व से उत्पन्न अलग-अलग तर्कों का निर्माण करके अपने विचार तत्वों को पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है "अपने-अपने अजनबी" की कथावस्तु में मनोरंजन के साथ-साथ उपन्यासकार का जीवन संबंधी विचार भी व्यक्त हुआ और इस उपन्यास में कल्पना तत्त्व भी अधिक सजीव है। "अपने-अपने अजनबी" की कथावस्तु में सत्यता के विचार ही दिखाई देते हैं। इस उपन्यास में जीवन की एक महत्त्वपूर्ण समस्या मृत्यु बोध को चुना गया है। यह समस्या निश्चित रूप से अपने युग की सबसे बड़ी समस्या है। इसी कारण से कुछ आलोचक इस उपन्यास को युग सत्य से युक्त मानते हैं। जीवन और मृत्यु के संघर्ष की यह कथा सत्यता इस गुण से पूर्ण कही जायेगी।

इस उपन्यास का मुख्य विचार यही है कि मृत्यु की भयंकरता मनुष्य में बड़ा परिवर्तन ला देती है। अपने प्रिय लोग भी अजनबी हो जाते हैं तथा बिना जाने-पहचाने अजनबी लोग भी अपने बन जाते हैं। इस तरह से उपन्यासकारने "अपने-अपने अजनबी" में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि मृत्यु को सामने देखकर प्रिय लोग भी अजनबी हो जाते हैं और अजनबी आत्मीय बन जाते हैं।

सेल्मा और योके दोनों का चारित्रिक विकास उपन्यासकारने स्वाभाविक ढंग से किया है। सेल्मा का चरित्र जीवन से उदास, कुंठित, अहंकारपूर्ण तथा अन्तर्मुखी व्यक्ति का चरित्र है। वह अपने रोग और वृध्दत्व के कारण जीवन प्रवाह से बिल्कुल अलग होकर निरपेक्ष हो गई है। उपन्यासकारने जीवन के प्रति उकसा-ऊबने का सफल चित्रण किया है। दूसरी तरफ योके एक तरुणी है। योके सेल्मा जैसी कुंठित वृध्दा के संपर्क में है। उसकी चेतना जीवंत और गतिशील है। सेल्मा का निराश और दु:खपूर्ण व्यक्तित्व उसे व्याकुल कर देता है। वह सेल्मा की तरह जीवन से पूरी तरह उदासीन तो नहीं होती। परंतु जीवन के प्रति रूक्ष हो जाती है। जीवन में जीवित रहने की और संघर्ष करने की इच्छा उसमें बनी रहती है। "अज्ञेय" ने जीवन के प्रति इन दो दृष्टिकोणों को सार्थक और सफलतापूर्वक अभिव्यक्त किया है।

वृध्द सेल्मा का चरित्र एक ऐसे व्यक्ति का चरित्र है जो अपने जीवन से बिल्कुल निरपेक्ष, कुंठित, आत्मकेंद्रित तथा अहंकार से भरा हुआ है। इसी कारण से समाज के साथ खुद के लिए व्यर्थ है। इस व्यर्थता की जानकारी सेल्मा को पूरी तरह से है। वह कुछ कैंसर रोग की पीड़ा के कारण और कुछ निराशा के कारण हर क्षण मृत्यु की प्रतीक्षा करती है। योके को बर्फीले पहाडों की चढ़ाई और प्रदेश की यात्रा के प्रति विशेष प्रेम है। वह अपने जीवन को अर्थपूर्ण रीति से व्यतित करना चाहती है। परंतु सेल्मा के साथ रहने से सेल्मा के दमित व्यक्तित्व का प्रभाव कुछ तो पड़ता है। परंतु इस प्रभाव से वह दब नहीं जाती। वह सेल्मा को अपने से दूर रखने का प्रयत्न करती है। एक रात तो उसका गला घोटने का प्रयत्न करती है। इसके पीछे उसकी जीवन चेतना ही है। यह चेतना सेल्मा के समान गलत मनोवृत्तियों को नष्ट करना चाहती है। तरुणी योके गतिशील, उभरा हुआ, आस्थावान और जीवंत भावनाओंका समूह है। तरुणी योके पूरब की जीवन दृष्टि है। तो वृध्द सेल्मा पाश्चात्य-पतनशील जीवन दृष्टि है। और "अज्ञेय" नें विशेष प्रतिभा से इन दो चरित्रों के द्वारा दो जीवन-दृष्टिकोणों को सफलतापूर्वक चित्रित किया है।

"अपने-अपने अजनबी" उपन्यास में मृत्यु से त्रस्त अनुभवहीन योके अपना भय दर्शाना नहीं चाहती और कहती है, "मैं बर्फ से नहीं डरती। डरती होती तो यहाँ आती ही क्यों? इससे पहले आल्प्स में बर्फानी चट्टानों की चढ़ाइयाँ चढ़ती रही हूँ - एक बार हिम-नदी से फिसल कर गिरी भी थी। हाथ-पैर टूट गये होते - बच ही गयी। फिर भी यहाँ भी तो बर्फ की सैर करने ही आयी थी।"[14]

"अपने-अपने अजनबी" उपन्यास के अन्तर्गत सेल्मा और योके के जीवन में मृत्यु से साक्षात्कार की स्थितियाँ दो बार आती हैं वे दूसरी बार में मृत्यु का वरण करती हैं। सेल्मा अतीत काल में चाय की दुकान करती थी। दुकान के समीप ही स्थित नदी में बाढ़ आने से सड़क और दुकान जलमग्न हो जाते हैं। फोटोग्राफर, यान और सेल्मा बाढ़ के बीच में घिर जाते हैं। यह सेल्मा के जीवन में मृत्यु से साक्षात्कार की प्रथम स्थिति थी। दूसरी बार बर्फ से घिरे काठघर में सेल्मा और योके कैद हो जाती हैं। सेल्मा जो विगत जीवन के अनुभवों से मृत्यु का साक्षात्कार करने की आदी हो गई थी, वर्तमान स्थिति में बर्फ से नही घबराती और मृत्यु का वरण कर लेती है। योके के जीवन में यह पहली स्थिति है, अत: वह मृत्यु से भयभयीत है, उसमें अनास्था रखती हुई अपने अस्तित्व के प्रति सचेत रहती है। इसके पश्चात् मृत्यु से साक्षात्कार की दूसरी स्थिति उसके जीवन में तब आती जब वह जर्मन-सैनिकों के अत्याचारों से विक्षिप्त हो जाती है। इस स्थिति में उसकी जीवनेच्छा समाप्त हो जाती है और वह मृत्यु का वरण करती है। इस स्थिति पर फ्रांस के द्वितीय महायुध्द से फैली स्वार्थमयता का [illegible] किया है, - " मृत्यु से परिचय के समय सेल्मा तथा योके की जो दशा है, वह प्रतीक रूप में फ्रांस [illegible]

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

अस्तित्ववाद के उदय और विकास की द्योतक कही जा सकती है। फ्रांस में द्वितीय विश्वयुध्द के उपरान्त वहाँ के निवासियों में जो निपट संकोणता एवं स्वार्थपरता आ गई थी, वह टूटे पुल पर घिरी युवती सेल्मा में द्रष्टव्य है। जर्मनों के अत्याचारों से फ्रांसीसी बुरी तरह घबरा उठे थे। अपनी पतित अवस्था तथा शत्रुओं के अत्याचार के फलस्वरुप फ्रांसीसियों में परिपात (रीमोर्स) का भाव जगा और उन्होंने निरीहतापूर्वक विद्यमान रहने की अपेक्षा "होना" या "न होना" में से अनेक नाजुक स्थितियों में " न होना" वरण किया। उनका यह कार्य योके के अन्त में भली भाँति व्यक्त हुआ है।"[15]

"अपने-अपने अजनबी" के प्रथम परिच्छेद में बर्फ की चट्टान से दबे काठघर में सेल्मा और योके दोनों भी मृत्यु से मिल जाती हैं। परंतु दोनों की प्रतिक्रियाएँ अलग-अलग ही है कारण सेल्मा वृध्दा, अत्यंत क्षीण और कैंसर से ग्रस्त है। तो योके जवान है और इत्तिफाक से इस स्थिति में फँसी है। इसलिए मृत्यु का अनुभव दोनों को है परंतु सेल्मा मरती हुई भी जी रही है और योके जीवित रहकर भी मर रही है और मरने की इच्छा करती है। उसे अपने बहुत नजदिक सभी ओर मृत्यु की गंध का अहसास होता है। और वह किसी प्रकार से इस गंध को अपने पास आने से रोकने का प्रयास करती है। लेकिन एकाएक योके को लगा कि वह गंध और कहीं से नही आ रही, उसीमें से की देह से आ रही है। कैंसर से पीडित सेल्मा की मृत्यु और योके का जीवन से छुटकारा एकसाथ होता है पर योके अंत में वरण की आजादी नहीं मृत्यु का ही वरण करती है।

यथार्थ में "अपने अपने अजनबी" में सेल्मा और योके ये दो ही मुख्य पात्र हैं। परंतु गौर से देखा जाय तो यह समझ में आता है कि उपन्यासकार ने सेल्मा को कुछ अधिक प्रधानता तो दी है, लेकिन उसके साथ मृत्यु-अनुभव संबंधी अपना विचार भी सेल्मा के माध्यम से व्यक्त किया है। यहाँ याद रखने योग्य बात यह है कि उन्होंने इस उपन्यास में मृत्यु के बारे में दो दृष्टिकोणों को चित्रित करने का प्रयास किया है। इस दृष्टि से यदि पूर्व की दृष्टि सेल्मा की है तो पश्चिम की दृष्टि योके की है। इस प्रकार अपनी मृत्यु पक्की हो जाने पर सेल्मा डरती नहीं इसके विपरित उसमें आश्चर्यचकित करनेवाला विश्वास और निश्चिंतता दिखाई देते हैं। और वह मृत्यु के भय से जीवन की सजीवता खोती नहीं। जीवन जितना है और जैसा है उसे बहुत बड़ी मात्रा में जी लेना योग्य समझती है। इसी कारण से वह आनंदपूर्वक क्रिसमस की राह देखती है और बर्फ से आच्छादित उस काठघर में ताश खेलती है। वह खुद तो गीत गाती है परंतु उसके साथ योके को भी गाने की प्रेरणा देती है। उसे यह भी भरोसा है कि बर्फाच्छिदित इस काठघर के बाहर मुक्त, स्वच्छ और स्नेहल धूप है और वह योके के इस कथन से सहमति नहीं दिखाती कि अभी चिमनी के अंदर शैतान उतर आयेगा। इसका कारण यह है कि उसे भरोसा है कि चिमनी से उतर कर शैतान नहीं आता, संत निकोलस आता है।

पाश्चात्य दर्शन मृत्यु को जीवन का खंडन मानता है इसीलिए वह अनास्थावादी है, और इसीलिए वह स्वयं को अवश, असहाय और निरुपाय मानता है। कार्ल यास्पर्स के शब्दों में , -

The consciousness of its liberty which awakens the self personal existence in the realm of being oneself is bound to a consciousness of itself as a self in the world, limited inescapably by its situation in the world, a situation which cannot be shared, which can only be known from within, and which, although it can be modified, cannot be changed into any thing other than a situation in the world imposing narrow limits. I cannot change my parents of sex, nor my own past, nor altogether the fate and fortune of my lot in the world, but I can accept and adopt them and make them my own."[16]

कार्ल यास्पर्स के कथनानुसार मनुष्य परिस्थितियों मे बध्द रहता है परंतु वह अपनी जिम्मेदारी को ढ़ोते हुए अपने अस्तित्व का अनुभव कर सकता है और वह अपने आसपास के वातावरण को तो नहीं बदल सकता परंतु उसे अंतर-दृष्टि से देखकर जरुरत के अनुसार परिवर्तित कर अपनाता और ग्रहण करता जा सकता है। सेल्मा के घर में अनायास ही बंदिनी हो जाने पर योके स्वयं की ऐसी ही स्थिति महसूस करती है - अवश, असहाय, निरुपाय। इसीलिए उसके मन में जीवन के प्रति जो अतिशय अनुराग है, वह उसे मृत्यु से घृणा करने के लिए ही विवश नहीं करता, वरन् उसे सर्वांगीण अनास्था से भी ओतप्रोत कर देता है। इसीलिए उसके लिए मृत्यु एक गहनतम् अन्धकार है, जो अपनी संपूर्ण गहनता के बावजूद भी अधूरा और निरर्थक है।

'अपने-अपने अजनबी' के सेल्मा और योके दो प्रमुख पात्र हैं, और ये दोनों ही पात्र औपन्यासिक उद्देश्य को अभिव्यक्त करते हैं। ये दोनों ही साथ-साथ मृत्यु से साक्षात्कार करते हैं। सेल्मा वृध्दा है कैंसर के रोग से पीड़ित है, अतःवह कभी भी, किसी भी क्षण मृत्यु-ग्रस्त हो सकती है। योके युवती है, किन्तु बर्फ में दब जाने के कारण वह भी अपने जीवन के प्रति बहुत आश्वस्त नहीं है। दोनों ही मृत्यु से साक्षात्कार के क्षणों में जी रही हैं, फिर भी दोनों का मृत्यु-दर्शन भिन्न है।

पौर्वात्य मृत्युदर्शन, विशेषतः भारतीय मृत्यु-दर्शन, जीवन और मृत्यु को एक-दूसरे का खंडन नहीं, वरन् पूरक मानता है। भारतीय संपूर्ण दर्शनों की सुगीता श्रीमध्दभागवतगीता में इसी पूरकता को इन शब्दों में व्यक्त किया गया है -

'वासांसि जीर्णानि यथा विहाय,

नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।

तथा शरीराणि विहाय जीर्णा -

अर्थात् जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नये वस्त्रों को ग्रहण करता है, उसी प्रकार जीवात्मा पुराने शरीरों को त्यागकर नये शरीरों को प्राप्त करता है।

यह जीवन-दर्शन अनास्था का नहीं, आस्था का है, भय का नहीं, उल्लास का है। यही कारण है कि भारतीय जीवन में जीवन की भाँति ही मृत्यु को भी अपरिहार्य स्थिति माना गया है। सेल्मा भी अपनी मृत्यु का इसी स्तर पर स्वागत करती है। वह पूर्णतया जानती है कि वह आये दिन मृत्यु के सन्निकटतर होती जा रही है, फिर भी वह. अपने जीवन से न तो हताश ही होती है और न अपनी कर्मष्य शक्ति का ही परित्याग करती है। वह इस स्थिति में भी सामान्य जीवन जीती है - ताश खेलती है, उल्लास के गीत गाती है और अपना कलेवा स्वयं बनाती है। वह अपने स्वावलंबन को भी नहीं छोडती और किसी भी मूल्य पर वह नहीं चाहती कि वह योके के अधीन हो जाये। वरन् वह तो चाहती थी कि जब वह मरे तो इतनी निर्द्वन्द्वता एवं स्वच्छन्दता से मरे कि कोई भी उसकी मृत्यु को देखनेवाला और उसके प्रति करुण भाव व्यक्त करनेवाला न हो।

मृत्यु के प्रति यही अनासक्त भाव, अथवा मृत्यु में नये जीवन की कल्पना से अद्भुत उल्लास, सेल्मा को वह दिव्य दृष्टि प्रदान कर देता है, जिससे उसके लिए मृत्यु और ईश्वर दोनों पर्यायवाची बन जाते हैं, और ईश्वर की पहचान के लिए मृत्यु की पहचान अपरिहार्य बन जाती है।

भारतीय दार्शनिकों की भाँति, यद्यपि योके भी मृत्यु को जीवन की एकमात्र सच्चाई मानती है, किन्तु उसकी इस मान्यता में भारतीय दार्शनिकों की सी निःसंगता और निस्पृहता नहीं है, वरन् मृत्यु का अतिशय भय है, जो उसके मृत्यु विषयक दृष्टिकोण को अनास्थावादी और दुर्बल बना देता है। यही कारण है कि क्रिसमस की खुशी भी यदि झूठी और नकली प्रतीत नहीं होती तो बहुत पतले कँाच की तरह नाजुक अवश्य लगती है, जो केवल छूने से ही नहीं, बल्कि जरा सी आवाज से भी टूट सकती है, जैसे वायलिन के स्वर के कँाच का गिलास चटक सकता है। इसीलिए वह बार-बार मृत्यु की सत्ता को झुठलाने का प्रयास करती है, मृत्यु को जीवन का खंडन मानती और अपने अस्तित्व के प्रति विशेष रूप से जागरुक रहती है।

अस्तित्ववाद की स्थापना :

अस्तित्ववादी आधुनिक विचारधारा ने बीसवीं सदी के पूरे विश्व के साहित्य को प्रभावित किया है। इस विचारधारा के मूल-प्रवर्तक फ्रेंच वैज्ञानिक पास्कल माने जाते हैं। पास्कल ने अवकाश में और काल में व्याप्त विश्व में मनुष्य के मर्यादित अस्तित्वबोध की बात कही। डेन्मार्क के विचारक

किर्कगाई को यूरोपीय विचारधारा के संबंध में स्थापक माना जाता है। इस विचारक ने मानवीय अस्तित्व की तल्लिनता, आजादी का चित्तन, मूल्य संघर्ष की अंदरुनी सावधानता आदि को लेकर अस्तित्वकेंद्री बातें कही है। इसके बाद जर्मन विचारक तथा साहित्यकार नित्शे ने निरीश्वरवादी दुनिया में अस्तित्व के मूल्य पर जोर दिया। इस सदी के अस्तित्ववादी विचारको में मार्सेल, यास्पर्स, हाइडेगर, बुबर मार्लोपोन्ती, सार्त्र आदि के प्रमुख नाम आते हैं। इन सभी विचारकों में सार्त्र का नाम ही साहित्यकारो में विशेष चर्चित है। इसका कारण वे एक विचारक ही नहीं साहित्यकार भी हैं। इसी कारण से अस्तित्ववादी साहित्यिक का मूल्यांकन करते समय सार्त्र का नाम विशेष स्पृहणीय है।

अस्तित्ववादी चिन्तन का सूत्र - वाक्य यह है -
'Existence precedes essence'

अर्थात्, अस्तित्व की स्थिति तत्त्व से पूर्व है। यहाँ तत्त्व का अर्थ है - मनुष्य की मौलिक प्रकृति और अस्तित्व का अर्थ है - कर्म-समूह, जिससे उसकी जागतिक स्थिती सिध्द होती है। इस प्रकार अस्तित्ववादी चिन्तन के धरातल पर मनुष्य, जीवन के जीवित संदर्भ में सोचता है।

सच देखा जाय तो आलोचकों का यह दुराग्रह है कि उन्होने 'अपने-अपने अजनबी' को अस्तित्ववादी उपन्यास स्वीकार कर भी यह नहीं माना। और एक ओर तो उन्होंने इस उपन्यास में अस्तित्वादी विचारों के कुछ प्रतीकों का उपयोग होना स्वीकार किया है, तो दूसरी ओर 'अपने-अपने अजनबी' अस्तित्ववादी उपन्यास मानने में ही हिचकिचाहट दिखाई है। सच तो यह है कि 'अपने-अपने अजनबी' में अस्तित्ववाद के सभी साधन तो उपस्थित हैं। और अस्तित्ववाद के निर्माता फ्रेंच विचारक ज्यॉ पॉल सार्त्र ही माने जाते हैं, मनुष्य का मतलब है आजादी। इस आजादी का अनुभव मनुष्य के मन में भी तभी होता है, जब अपनी जीवन प्रक्रियाओं के बारे में वह ध्यानपूर्वक चिन्तन-मनन करता है और उससे जो अनुमान निकालता है। वह खुद उसी के लिए बहुत भयकारी मालूम होता है। उसे मालूम होता है कि सृष्टि की मर्यादाएँ बहुत व्यापक हैं और इसमें उसकी अल्प सत्ता का कोई खास महत्त्व नहीं है। उसके सभी ओर बिल्कुल शून्य की स्थिति व्याप्त है जिसमें एक तरह से उनका विशेष मिलन हो जाता है। इस शून्यता में अपने अस्तित्व के विशेष मिलन के भाव से मनुष्य पूरी तरह त्रस्त हो जाता है।वहइस शून्यता की स्थिति से ऊपर उठकर अपने अस्तित्व की रक्षा करने की इच्छा रखता है जिससे उसकी पूर्णता बनी रहे, उसकी आजादी अखंड रहे और इस सृष्टि की बड़ी व्यापक मर्यादाओं के घेरे में व्याप्त शून्य के हाथ उसे न काट डालें। मनुष्य की इसी इच्छा से अस्तित्ववाद का आरंभ होता है।

अस्तित्ववाद आधुनिक यूरोपीय साहित्य की बहुचर्चित प्रवृत्ति है। अज्ञेय पर सार्त्र का बहुत प्रभाव है। अस्तित्ववाद में तर्क को व्यर्थ समझकर त्यागा जाता है। मनुष्य के पूर्ण अस्तित्व में विश्वास रखना इस विचारधारा की मुख्य स्थापना है। मनुष्य सृष्टि में इसीलिए आया है कि

अपने अस्तित्व की रक्षा करते हुए जीवन जिये। अस्तित्ववाद में मनुष्य की स्वतंत्रता को उसके जीवन का मूलाधार माना जाता है। मानव जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप, सबसे बड़ी चुनौती मृत्यु है। जन्म के साथ मृत्यु अनिवार्य रूप से सम्बध्द है। अज्ञेय के सभी उपन्यासों में किसी न किसी रूप में इस प्रकार का चिन्तन अवश्य व्यक्त हुआ है। "अपने-अपने अजनबी" इस उपन्यास में अस्तित्ववादी शब्दावली का भी विशिष्ट प्रयोग हुआ है - वरण, स्वतंत्रता, विसंगत, मृत्यु का डर आदि इसी प्रकार के शब्द हैं।

अस्तित्ववादी चिन्तन में ईश्वर विषयक अवधारणा को लेकर दो वर्ग हैं। एक वर्ग मानव जीवन को ईश्वर से संयुक्त करके उसे उसका वास्तविक मूल्य देना चाहता है। कीर्केगार्द तथा यास्पर्स इस वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। दूसरा वर्ग ईश्वर में आस्था नहीं रखता। इस निरीश्वरवादी वर्ग का प्रतिनिधित्व सार्त्र करते हैं। "अपने-अपने अजनबी" में सेल्मा प्रथम वर्ग की और योके द्वितीय वर्ग की प्रतिनिधि है। सेल्मा ने जीवन जिया है, वह न तो सहज है और न सरल। अनुभव और संघर्ष सेल्मा के हृदय में ईश्वर के प्रति आस्था उत्पन्न कर देते हैं। सेल्मा बार-बार योके से एपिफ़ानिया के त्योहार के विषय में पूछती है अर्थात् एपिफ़ानिया के माध्यम से अपने हृदय में उमड़ती हुई आकुलमयी आस्था की अभिव्यक्ति करती है। और जब योके से यह प्रश्न पूछती है, "कल एपिफ़ानिया का त्योहार है। कल... लेकिन योके, तुम ईश्वर को मानती हो?"[17] वस्तुतः योके से प्रश्न नहीं पूछ रही है, वरन् इस प्रश्न की पीठिका से वह अपने समस्त जीवन की संजोयी आस्था को विवश होकर एक साथ ही उँडेल रही है। जब इस प्रश्न के उत्तर में योके अपनी असमर्थता प्रकट करती है तो सेल्मा कहती है "यों तो मैं भी नहीं कह सकती कि मैं जानती हूँ, कि मैं सचमुच मानती हूँ। लेकिन कभी जब यह बात सोचती हूँ कि मैं मरनेवाली हूँ, और जब मुझे ध्यान आता है कि तुम यहाँ उपस्थित हो, जब मैं अपने से अलग एक सजीव उपस्थिति के रूप में तुम्हारी बात सोचती हूँ - तब मुझे एकाएक निश्चित रूप से लगता है कि ईश्वर है - कि सजीव उपस्थिति का नाम ही ईश्वर है - कोई भी उपस्थिति ईश्वर है। क्योंकि नहीं तो उपस्थिति हो ही कैसे सकती है?"[18] इस प्रकार "अपने-अपने अजनबी" में भी नास्तिक और आस्तिक अस्तित्ववादी विचार प्रवाह के मध्य का फर्क स्पष्ट किया गया है। इस उपन्यास की सेल्मा आस्तिक-अस्तित्ववादी विचार प्रवाह की प्रतीक है। इसं कारण से आस्थाहीन योके सेल्मा के आस्थावान व्यक्तित्व का मर्म नहीं समझ पाती।

योके यह भी चाहती है कि साथी कब जाए और वह अकेली रह जाए। उसी तरह सेल्मा को देख कर उसे महसूस होता है कि कैसे कोई सजीव प्राणी जीने की इच्छा से अलग उदासीन भी हो सकता है। साथ ही सेल्मा मौत को ईश्वर और योके ईश्वर को जीवन का खंडन मानती है तथैव वह ईश्वर को भी नहीं स्वीकार करती। और अगर ईश्वर मौत का ही दूसरा नाम है तो वह उसके लिए

और भी ज़ादा अग्राह्य हो जाता है। इस तरह योके कोई भी निश्चय करने में असमर्थ और पश्चात्ताप से ग्रस्त दिखाई देती है।

सेल्मा का फोटोग्राफर को डूबते देखकर दुकान के पर्दे खींचकर अन्दर जाना बाहर के जीवन से स्वयं को भिन्न मानने का परिचायक है। वह अन्दर और बाहर के इस वैषम्य को स्थिर रखना उचित मानती है|इसी स्थिरता की सामर्थ्य को जीवन मानती है। जब सेल्मा मृत्यु के निकटतम पहुँच जाती है और योके को यह बताती है कि बोध में से ही दर्द और मृत्यु की सत्यता निकलती है, तो योके इतनी उत्तेजित हो जाती है कि वह इससे आगे और कुछ सुनना नहीं चाहती। वह सेल्मा को उसी के कमरे में छोड़कर लपककर दूसरे कमरे में चली जाती है तब उसका अस्तित्व बोध अपनी समस्त गंभीरता लेकर विविध आयामों से जुड़कर और विभिन्न परिदृश्यों से संपृक्त होकर चिन्तन में पड़ता है। इस विवरण से यह स्पष्ट होता है कि यह उपन्यास अस्तित्ववादी विचार प्रवाह का प्रकटीकरण करता है। योके एवं सेल्मा के जीवन और काल के बारे में व्यक्त विचारों में अस्तित्ववादी प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। किसी जगह आशा, किसी जगह जानने की इच्छा, किसी जगह तिरस्कार, किसी जगह आत्मपीड़ा, किसी जगह क्रोध, किसी जगह जुगुप्सा, किसी जगह एकाकीपन की अनुभूतियों के मध्य झूलते हुए मानव मन की चेतना वृत्तियों का विश्लेषण अज्ञेय ने किया है।

अस्तित्ववाद से अज्ञेय ने कुछ बौध्दिक उत्तेजना पाई हो, पर अपने समूचे उत्तरकालीन कृतित्व में लेखक का यत्न यही रहा है कि भारतीय परिस्थितियों में अस्तित्ववाद से कोई बड़ी और अधिक संगत दृष्टि विकसित की जाये।

निष्कर्ष :-

उद्‌देश्य और जीवन तत्वज्ञान की दृष्टि से अज्ञेय की रचना "अपने-अपने अजनबी" श्रेष्ठ और सफल कृति है। आधुनिक जीवन में अस्तित्ववादी व्यक्ति दूसरों के साथ एक ऐसा अजनबीपन अनुभव करता है कि उसके मानवीय सहानुभूति, ममता, करूणा आदि भाव व्यक्ति के जीवन में स्वार्थमय दृष्टिकोण को परिचालित करते हैं। अपने स्वार्थ और अहं में लिप्त व्यक्ति निराशामय जीवन जीता हुआ अस्तित्व के प्रति सचेत रहता है।

"अपने-अपने अजनबी" में अज्ञेय के काल अनुभव संबंधी विचारों का सुंदर विवेचन हुआ है।

यह उपन्यास मौत से साक्षात्कार का हिन्दी का सबसे पहला अस्तित्ववादी उपन्यास भी है।

अस्तित्ववादी जीवन-दर्शन की यह संकुचित मनोवृत्ति, अहं-भावना, स्वार्थमयता, ईश्वर

और मृत्यु के प्रति अनास्था तथा मृत्यु का भय आदि आधुनिक मानव-जीवन के स्वार्थपूर्ण दृष्टिकोण का परिचय देते हैं। इस दृष्टि से यह उपन्यास महत्त्वपूर्ण है।

बर्फ से घिरे घर में बंद दो नारियों की मनःस्थितियों की बड़ी सूक्ष्म व्याख्या की गई है। बंद समय में स्थिर जीवन और आसन्नगंधा मृत्यु की सूक्ष्म रेखाओं, बिम्बों और प्रतीकों द्वारा बड़ी मार्मिक व्यंजना की गई है, और साथ ही साथ अस्तित्ववादी जीवन-दर्शन को उभारा गया है।

०००

संदर्भ :

1. अपने - अपने अजनबी - 'अज्ञेय', सं. 1981, पृ.1
2. वही, पृ. 3
3. वही, पृ.3
4. वही, पृ. 5
5. वही, पृ. 52
6. वही, पृ. 73
7. वही, पृ. 97
8. वही, पृ.100
9. आधुनिक हिन्दी उपन्यास और अजनबीपन - विद्याशंकर राय, सं. 1988, पृ. 104
10. अज्ञेय का उपन्यास साहित्य - डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र, सं. 1976, पृ. 131-132.
11. हिन्दी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ - डॉ. शशिभूषण सिंहल, प्र.सं.1970, पृ. 174
12. अपने-अपने अजनबी - 'अज्ञेय', अ.सं. 1981, पृ. 38
13. 'ज्ञानोदय' मासिक, जुलाई - 1993
14. अपने-अपने अजनबी - 'अज्ञेय', अ.सं. 1981, पृ. 2
15. हिन्दी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ - डॉ. शशिभूषण सिंहल, प्र.सं.1970, पृ. 177-178
16. Six Existantialist Thinkers - H.J.Blackham, Page No.51
17. अपने-अपने अजनबी - 'अज्ञेय, अ.सं. 1981, पृ. 37
18. वही, पृ. 37-38

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR